दैनिक भास्कर 16/7/14

हजारों भेड़ों को मिलेगा नई तकनीक का चारा

केंद्रीय भेड़ एवं ऊन अनुसंधान संस्थान अविकानगर में अकाल की स्थिति से निपटने की तैयारियां शुरू, संपूर्ण आहार बनेगा

भास्कर न्यूज | मालपुरा

अकाल की विभीषिका में भी केंद्रीय भेड़ एवं ऊन अनुसंधान संस्थान अविकानगर में अनुसंधानिक उपयोग के लिए पल रही हजारों भेड़ों को आधुनिक तकनीक युक्त संपूर्ण पोषण आहार देकर तंदुरुस्त रखा जाएगा। इसके लिए संस्थान स्तर पर तैयारियां शुरू कर दी गई हैं। हाल ही में हुई संस्थान के वैज्ञानिकों, अधिकारियों व विभागाध्यक्षों की बैठक में चर्चा के बाद अकाल की स्थिति से निपटने के लिए तैयारियां शुरू कर दी गई हैं।

केंद्रीय भेड़ एवं ऊन अनुसंधान संस्थान अविकानगर व इसके तीन उप केंद्रों सहित संस्थान के पास करीब नौ हजार भेड़ें हैं। अलग-अलग उप केंद्रों पर रखी जा रही भिन्न भिन्न उपयोग में आने वाली भेड़ों की कीमत लाखों रुपए है। ऐसे में अकाल के दौरान इन्हें स्वस्थ रखने के लिए संस्थान के वैज्ञानिक अपनी जिम्मेदारी को देखते संपूर्ण पोषण आहार की तैयारी में है।

केंद्रीय भेड़ एवं ऊन अनुसंधान संस्थान अविकानगर के निदेशक डॉ. एस.एम.के. नकवी ने बताया कि केंद्रीय भेड़ एवं ऊन अनुसंधान संस्थान अविकानगर मुख्यालय पर साढ़े तीन हजार भेड़ों को विभिन्न अनुसंधानों के लिए पाला जा रहा है, जबकि संस्थान के उप केंद्र मनावनूर में उन्नत किस्म

मालपुरा. अविकानगर में अनुसंधानिक उपयोग के लिए पल रही भेड़ें।

की ऊन के लिए करीब साढ़े तीन हजार भेड़ें हैं। इसी प्रकार मांस उपयोगी करीब पांच सौ भेड़ें गरसा में पाल रही है। संस्थान के बीकानेर उप केंद्र पर कारपेट बनाने का ऊन देने वाली करीब दो हजार भेड़ें हैं।

संस्थान निदेशक डॉ. नकवी ने चर्चा में बताया कि अकाल की स्थिति में भेड़ों के लिए चारा पानी की समस्या पैदा होती है। फिर भी संस्थान द्वारा इनके लिए दाना पानी की पूर्ण व्यवस्था की जाती है। इन्हें अकाल के दौरान वैज्ञानिकों द्वारा शोधित नई तकनीक का आहार दिया जाएगा। नागफनी से निर्मित चारा पेट भरने के साथ साथ पानी की भी पूर्ति करता है।

संस्थान में नागफनी की खेती की जा रही है यह सूखे में पैदा होती है इसलिए इसकी उपज आवश्यक रूप से मिलती है। अकाल में भेड़ों के आहार के लिए सूखे चारे व भूसे तथा तूड़ी एकत्रित कर उसे उपयोगी बनाने की योजना है।

इसके अलावा संस्थान द्वारा निर्मित संपूर्ण आहार बट्टिकाएं व त्रिस्तरीय चारा विकास योजना के तहत अरडू के पत्ते भी उपयोगी है। इनका किसानों को प्रदर्शन कर उपयोग करने का तरीका बताया गया है। किसानों के रेवड़ में भी नवीन तकनीक का प्रदर्शन कर तकनीकों को प्रचारित किया जा चुका है।

निदेशक ने कहा है कि अकाल की स्थिति में किसान अपने जानवरों को उक्त विधियों से चारा तैयार कर तंदुरुस्त रख सकते हैं।

16/7/2014